१२. सहर्ष स्वीकारा है

– गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

कवि परिचय : गजानन माधव 'मुक्तिबोध' जी का जन्म १३ नवंबर १९१७ को मुरैना (मध्य प्रदेश) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मध्य प्रदेश में तथा स्नातकोत्तर शिक्षा नागपुर में हुई। आपने अध्यापन कार्य के साथ 'हंस' तथा 'नया खून' पत्रिका का संपादन भी किया। आप नई कविता के सर्वाधिक चर्चित कवि रहे हैं। प्रकृति प्रेम, सौंदर्य, कल्पनाप्रियता के साथ सर्वहारा वर्ग के आक्रोश तथा विद्रोह के विविध रूपों का यथार्थ चित्रण आपके काव्य की विशेषता है। मुक्तिबोध जी की मृत्यु १९६४ में हुई।

प्रमुख कृतियाँ : 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरी-भूरी खाक धूल' प्रतिनिधि कविताएँ (काव्यसंग्रह), 'सतह से उठता आदमी' (कहानी संग्रह), 'विपात्र' (उपन्यास), 'कामायनी-एक पुनर्विचार' (आलोचना) आदि।

काव्य प्रकार : 'नई कविता' मानव विशिष्टता से उपजी उस मानव के लघु परिवेश को दर्शाती है जो आज की तिक्तता और विषमता को भोग रहा है। इन सबके बीच वह अपने व्यक्तित्व को भी सुरक्षित रखना चाहता है। हिंदी साहित्य में समय के अनुसार बदलाव आए और नई कविता प्रमुखता से लिखी जाने लगी। इन कविताओं में जीवन की विसंगतियों का चित्रण, जीवन के संघर्ष, तत्कालीन समस्या को सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया है।

काव्य परिचय : प्रस्तुत नई कविता में कवि ने जिंदगी में जो कुछ भी मिले उसे सानंद स्वीकारने की बात कही है। दुख, संघर्ष, गरीबी, अभाव, अवसाद, संदिग्धता सभी को स्वीकार करने से ही व्यक्ति परिपक्व बनता है। आत्मीयता, भविष्य की चिंता, ममता की कोमलता मनुष्य को कमजोर बनाती है, डराती है। इसलिए कवि कभी-कभी अंधकार में लुप्त होना चाहता है। प्रकृति को जो कुछ भी प्यारा है, वह उसने हमें सौंपा है। इसलिए जो कुछ भी मिला है या मिलने की संभावना है, उसे सहज अपनाना चाहिए। आपकी परिष्कृत भाषा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।

जिंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है -
संवेदन तुम्हारा है !!
जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है !

सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं, भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित, आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।
ममता के बादल की मँड़राती कोमलता-
भीतर पिराती है
कमजोर और अक्षम अब हो गई है आत्मा यह
छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है
बहलाती-सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है !!

सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता !!
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है !!
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता-सा लगता है, होता-सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

('प्रतिनिधि कविताएँ' संग्रह से)

शब्दार्थ :

गरबीली = स्वाभिमानी
मौलिक = मूलभूत
अपलक = एकटक
संवेदन = अनुभूति
सोता = झरना
परिवेष्टित = चारों ओर से घिरा हुआ, ढका हुआ
पाताली अंधेरा = धरती की गहराई में पाई जाने वाली धुँध
विवर = बिल, गड्ढा

स्वाध्याय

आकलन

१. **सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

(अ) **घटनाक्रम के अनुसार लिखिए –**

(१) कवि दंड पाना चाहता है।

(२) विधाता का सहारा पाना चाहता है।

(३) कवि का मानना है कि जो होता-सा लगता है, वह विधाता के कारण होता है।

(आ) **निम्नलिखित असत्य कथनों को कविता के आधार पर सही करके लिखिए –**

(१) जो कुछ निद्रित अपलक है, वह तुम्हारा असंवेदन है।

(२) अब यह आत्मा बलवान और सक्षम हो गई है और छटपटाती छाती को वर्तमान में सताती है।

काव्य सौंदर्य

२. (अ) **'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है', इस पंक्ति से कवि का मंतव्य स्पष्ट कीजिए।**

(आ) **'जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है', इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।**

अभिव्यक्ति

३. (अ) **'अपनी जिंदगी को सहर्ष स्वीकारना चाहिए', इस कथन पर अपने विचार लिखिए।**

(आ) **'जीवन में अत्यधिक मोह से अलग होने की आवश्यकता है', इस वाक्य में व्यक्त भाव प्रकट कीजिए।**

रसास्वादन

४. **प्रस्तुत नई कविता का भाव तथा भाषाई विशेषताओं के आधार पर रसास्वादन कीजिए।**

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) मुक्तिबोध जी की कविताओं की विशेषताएँ –

(१) ....

(२) ....

(आ) मुक्तिबोध जी का साहित्य –

....

....

६. (अ) निम्नलिखित काव्यांश (पंक्तियों) में उद्धृत अलंकार पहचानकर लिखिए –

(१) कूलन में केलिन में, कछारन में, कुंजों में
क्यारियों में, कलि-कलीन में बगरो बसंत है ।

(२) केकी-रव की नुपूर-ध्वनि सुन ।
जगती-जगती की मूक प्यास ।

(आ) निम्नलिखित अलंकारों से युक्त पंक्तियाँ लिखिए –

(१) वक्रोक्ति

....

....

(२) श्लेष

....

....